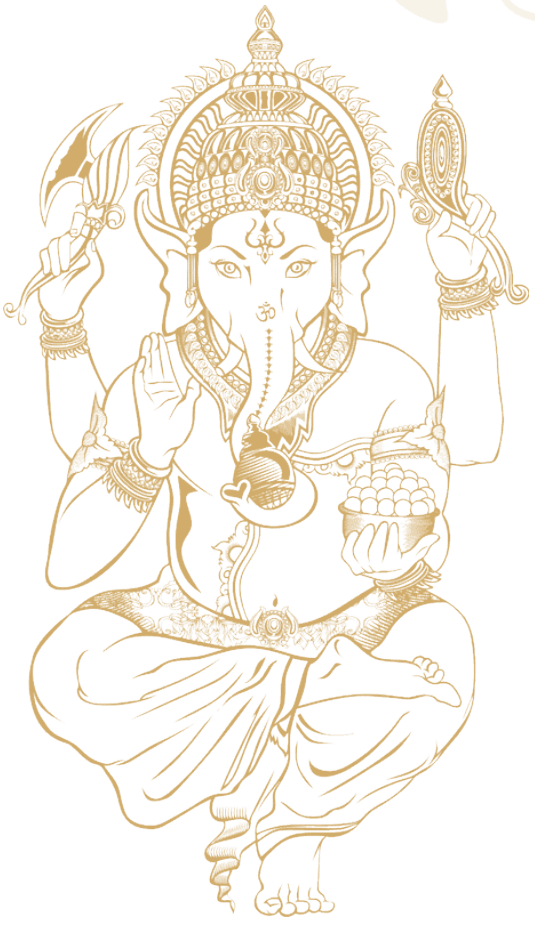

Mr. Brijraj singh hada

Ms. Divya jhala

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120094607

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
20-21/02/1991	जन्म तिथि	15/10/1995
बुध-गुरुवार	दिन	रविवार
घंटे 04:15:00	जन्म समय	11:45:00 घंटे
घटी 53:16:33	जन्म समय(घटी)	13:24:34 घटी
India	देश	India
Jhalawar	स्थान	Kota
24:36:00 उत्तर	अक्षांश	25:11:00 उत्तर
76:09:00 पूर्व	रेखांश	75:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:25:24	स्थानिक संस्कार	-00:26:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:56:22	सूर्योदय	06:24:18
18:22:54	सूर्यास्त	17:59:34
23:44:16	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:00

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 2वर्ष 7मा 9दि	21:45:18	धनु	लग्न	धनु	07:22:03	राहु 10वर्ष 8मा 4दि	
राहु	08:03:34	कुंभ	सूर्य	कन्या	27:37:08	शनि	
01/10/2016	24:55:36	मेष	चंद्र	मिथु	12:05:21	20/06/2022	
01/10/2034	16:27:34	वृष	मंगल	वृश्चि	02:12:11	19/06/2041	
राहु 14/06/2019	00:41:48	कुंभ	बुध	कन्या	11:19:56	शनि 22/06/2025	
गुरु 06/11/2021	11:58:45	कर्क व	गुरु	वृश्चि	19:02:00	बुध 02/03/2028	
शनि 12/09/2024	04:29:59	मीन	शुक्र	तुला	12:20:30	केतु 10/04/2029	
बुध 02/04/2027	07:51:03	मक	शनि व	कुंभ	25:22:08	शुक्र 10/06/2032	
केतु 19/04/2028	03:45:32	मक व	राहु	तुला	02:43:10	सूर्य 23/05/2033	
शुक्र 20/04/2031	03:45:32	कर्क व	केतु	मेष	02:43:10	चन्द्र 22/12/2034	
सूर्य 14/03/2032	18:46:07	धनु	हर्ष	मक	02:45:30	मंगल 31/01/2036	
चन्द्र 13/09/2033	22:09:50	धनु	नेप	धनु	29:00:09	राहु 07/12/2038	
मंगल 01/10/2034	26:38:21	तुला	प्लूटो	वृश्चि	05:13:43	गुरु 19/06/2041	

लग्न-चलित

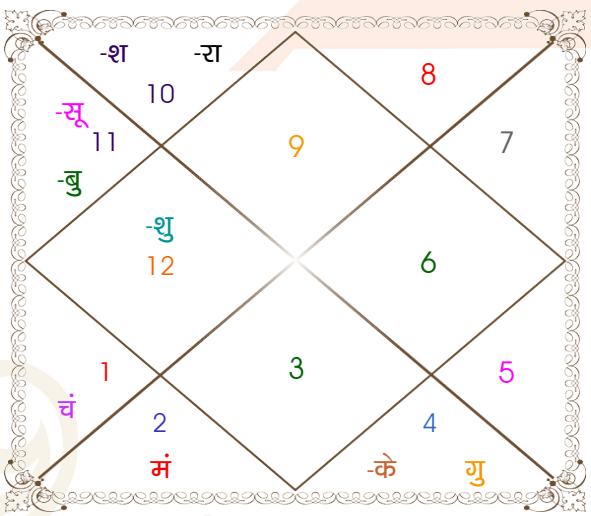

लग्न-चलित

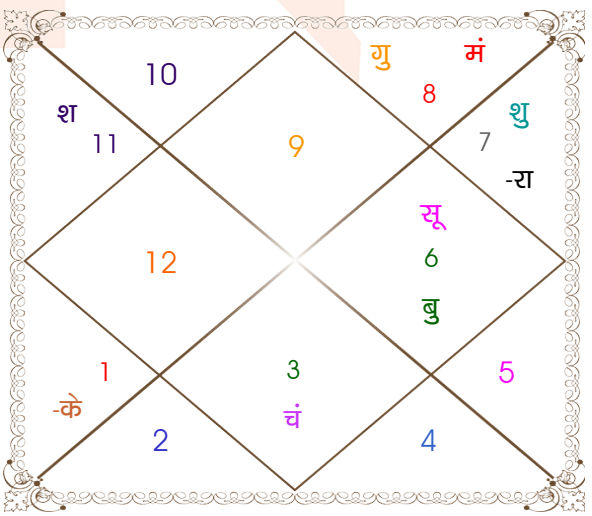

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	श्वान	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	बुध	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	मिथुन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

डतण ठतपरतंर`पदही `ींकं का वर्ग मृग है तथा डेण क्पअलं रींसं का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण ठतपरतंर`पदही `ींकं और डेण क्पअलं रींसं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण ठतपरतंर`पदही `ींकं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

डेण क्पअलं रींसं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण क्पअलं रींसं कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण क्पअलं रींसं कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु डेण् क्पअलं रींसं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डतण् ठतपरतंर`पदही ीकं कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण् ठतपरतंर`पदही ीकं तथा डेण् क्पअलं रींसं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।